शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय

राजनांदगांव(छ.ग.)

विभागीय प्रतिवेदन

2016-2017

संस्कृत विभाग

विभागाध्यक्ष
डॉ.दिव्या देशपांडे

प्राचार्य
डॉ.आर.एन.सिंह

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग)

संस्कृत विभाग
वर्ष 2016–17

1. <u>विभाग का परिचय :–</u>

- **स्थापना वर्ष** – स्नातक – 1957
  स्नातकोत्तर – 2003

- **स्वीकृत पद** – प्राध्यापक – 01
  सहा.प्राध्यापक – 02

- **संचालित पाठ्यक्रम** – स्नातक एवं स्नातकोत्तर

- **विभिन्न कक्षाओं में छात्र संख्या सत्र 2016–17**
  स्नातक प्रथम वर्ष – 16
  स्नातक द्वितीय वर्ष – 16
  स्नातक अंतिम वर्ष – 13
  स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष – 20
  स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष – 18

- **विभाग में कार्यरत प्राध्यापकों की संख्या –**
  सहायक प्राध्यापक – (1) दिव्या देशपाण्डे
  अतिथि व्याख्याता – (1) डॉ.महेन्द्र नगपुरे

- **स्नातक एवं स्नातकोत्तर परिषद् –**

संस्कृत साहित्य परिषद का गठन

वर्ष 2016–17 में प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह जी की अध्यक्षता में प्रावीण्य सूची के आधार पर संस्कृत साहित्य परिषद् का गठन निम्नानुसार किया गया–

1. **अध्यक्ष** – श्री फागेश्वर साहू (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
2. **उपाध्यक्ष** – कुमारी पूजा चौधरी (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
3. **सचिव** – कुमारी चन्द्रकली (स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष)
4. **सह सचिव** – कुमारी अनिशा कौर (स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष)

कार्यकारी सदस्य :– श्री भेषराम टण्डन, श्री दुलेश्वर साहू, श्री नीरज कुमार पटेल, कुमारी राशि, कु.खिलेश्वरी साहू, कु. जानकी सिंगारे, श्री महेश साहू, श्री शत्रुहन, कु झमित उसारे, कु. फुलेश्वरी, कु.टामिन, कु. दिव्या वासनिक

संस्कृत –विभाग

संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम
दिनांक 16.08.2016 – 23.08.2016

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दिनांक 16.08.2016 से 23.08.2016 तक संस्कृत – सप्ताह का आयोजन किया गया । दिनांक 16.08.2016 को संस्कृत सप्ताह का उद्घाटन शोभा यात्रा के साथ हुआ । विभाग के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय परिसर का भ्रमण कर परिसर के मंदिरों में देवपूजन, स्तोत्रपाठ तथा वैदिकमन्त्र पाठ किया। दिनांक 17.08.2016 को 'संस्कृतं – संस्कृतिश्च' विषय पर संस्कृत निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान एम. ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा पूजा चौधरी, द्वितीय स्थान फागेश्वर साहू तथा तृतीय स्थान संयुक्त रूप से नीरज पटेल तथा खिलेश्वरी साहू ने प्राप्त किया । दिनांक 19.08.2016 को रक्षासूत्र बंधन कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस दिन विभाग के विद्यार्थियों ने परस्पर श्लोकोच्चार करते हुए एक – दूसरे को रक्षासूत्र बांधे । दिनांक 20.08.2016 गीता–श्लोक पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में विभाग के प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने गीता के द्वादश अध्याय का लयबद्ध पाठ किया । इस गीता श्लोक पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु. पूजा चौधरी, द्वितीय स्थान फागेश्वर साहू तथा तृतीय स्थान नीरज पटेल ने प्राप्त किया । दिनांक 22.08.2016 को विस्तार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । इस कार्यक्रम में विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के महत्व एवं समसामायिक उपयोगिता से अवगत कराया । साथ ही संस्कृत के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं के विषय में भी मार्गदर्शन दिया ।

कार्यक्रम का समापन दिनांक 23.08.2016 को किया गया । समापन कार्यक्रम प्रभारी संस्कृत विभाग डॉ. शंकरमुनि राय जी की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन एवं स्वस्ति वाचन से हुआ । विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने संस्कृत सप्ताह मनाने का उद्देश्य बताते हुये सप्ताह भर के कार्यक्रमों से संबंधित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । डॉ. शंकरमुनि राय ने संस्कृत भाषा के महत्व, महाविद्यालय में संस्कृत विभाग की क्रियाशीलता एवं भविष्य में संस्कृत की उन्नति हेतु किये जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला । अन्त में आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे ने किया । संस्कृत सप्ताह के अंतर्गत होने वाली प्रतियोगिताओं के पुरस्कार संस्कृत संभाषण शिविर के समापन समारोह में वितरित किये गये ।

गणेशोत्सव

दिनांक 05.09.2016 से 15.09.2016

प्रतिवर्ष की भांति सत्र 2016–17 में भी संस्कृत विभाग के छात्र–छात्राओं ने गणेश चतुर्थी से लेकर गणेश विसर्जन तक प्रतिदिन महाविद्यालय परिसर में स्थित गणेश मन्दिर में जाकर प्रातःकाल पूजार्चन किया । विद्यार्थी ने प्रतिदिन देवालय में जाकर गणेश स्तोत्र, संकष्टनाशनं स्तोत्र, गणेश वन्दना का पाठ किया । तत्पश्चात् वे अपने अध्ययन का प्रारंभ करते थे । इस गणेशोत्सव में विभाग के प्राध्यापकगण भी सम्मिलित हुये।

संस्कृत साहित्य परिषद् का उद्घाटन

दिनांक 19.09.2016

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में दिनांक 19.09.2016 को 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर के उद्घाटन के साथ प्राचार्य महोदय द्वारा संस्कृत साहित्य परिषद् का गठन किया गया । प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी के मार्गदर्शन में प्रावीण्यता के आधार पर संस्कृत – साहित्य परिषद् का गठन निम्नानुसार हुआ –

1. अध्यक्ष – श्री फागेश्वर साहू (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
2. उपाध्यक्ष – कु. पूजा चौधरी (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
3. सचिव – कु. चन्द्रकली (स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध)
4. सहसचिव – कु. अनिशा कौर (स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध)

कार्यकारी सदस्य – श्री भेषराम टण्डन, श्री दुलेश्वर साहू, श्री नीरज कुमार पटेल, कुमारी शशि, कु. खिलेश्वरी साहू, कु. जानकी सिंगारे. श्री महेश साहू , श्री शत्रुहन , कु. झमित उसारे, कु. फुलेश्वरी , कु. टामिन, कु. दिव्या वासनिक

इस अवसर पर प्राचार्य जी ने परिषद् के पदाधिकारियों को शुभकामनायें दी तथा उन्हें उनके दायित्व बोध से अवगत कराया ।

संस्कृत – सम्भाषण शिविर

दिनांक 19.09.2016 से 06.10.2016

दिनांक 19.09.2016 से 06.10.2016 तक संस्कृत विभाग में संस्कृत सम्भाषण शिविर का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन 19.09.2016 को प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। उद्घाटन के अवसर पर सम्भाषण प्रशिक्षक श्री वंशीधर द्विवेदी, श्री राकेश वर्मा, हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय, संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. दिव्या देशपाण्डे तथा अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे उपस्थित थे । इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी ने संस्कृत साहित्य परिषद् का उद्घाटन किया । अपने उद्बोधन में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी ने कहा कि संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा है। जर्मनी, अमेरिका जैसे देशों में भी संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रति रूचि बढ रही है। इसका कारण संस्कृत भाषा में उपलब्ध समृद्ध ज्ञान एवं इस भाषा की वैज्ञानिकता ही है । उन्होने कहा कि देश में संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए रोजगार के कई अवसर दिखाई पड रहे हैं संस्कृत के विद्यार्थी थोडे से परिश्रम से नेट–सेट जैसी परीक्षाओं को भी सहजता से उत्तीर्ण कर सकते है । कार्यक्रम का आरंभ स्वस्तिवाचन एवं मन्त्रोच्चार के साथ किया गया । सरस्वती पूजन के पश्चात सरस्वती वंदना का समवेत गायन किया गया । स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध की छात्रा खिलेश्वरी साहू ने संस्कृत में एकल गीत का गायन किया । कार्यक्रम का संचालन स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध के छात्र श्री फागेश्वर साहू ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने किया ।

उद्घाटन के पश्चात निरन्तर 15 दिवस संस्कृत सम्भाषण का प्रशिक्षण दोपहर 2 बजे से शाम 5.30 बजे तक दिया गया जिससे न केवल विद्यार्थियों का भाषा कौशल का वर्धन हुआ अपितु उनके शब्द भंडार, आत्मविश्वास, उच्चारण क्षमता का भी विकास हुआ ।

दिनांक 06.10.2016 को संभाषण शिविर का समापन किया गया । इस समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गढवाल विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के प्राध्यापक एवं यू.जी.सी. के सदस्य डॉ. एस.सी. सिंह एवं विशेष अतिथि के रूप में कमला महिला महाविद्यालय राजनांदगांव की प्राचार्य डॉ. देवीनंदा मेश्राम उपस्थित रहे । इसके अतिरिक्त प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी संभाषण शिविर प्रशिक्षक श्री बंशीधर द्विवेदी, श्री राकेश वर्मा, हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय, संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. दिव्या देशपाण्डे तथा अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे भी विशेष रूप से उपस्थित रहे । इस अवसर पर संभाषण शिविर प्रशिक्षक श्री बंशीधर द्विवेदी , श्री राकेश वर्मा तथा हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय को उनकी संस्कृत विभाग में दी गई सेवाओं के लिये विशेष रूप से शाल, श्रीफल एवं प्रशस्त्रि पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया । इस अवसर पर संस्कृत सप्ताह में आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों को भी वितरित किया गया ।

स्वस्ति वाचन एवं मन्त्रोचार के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ । सरस्वती पूजन एवं सामूहिक संस्कृत गीत गायन के पश्चात डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने सम्पूर्ण 15 दिवस का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. एस. सी. सिंह जी ने कहा कि यह दिग्विजय महाविद्यालय संस्कृत शिक्षा के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ है। ऐसा प्रतित हो रहा है तथा संस्कृत भाषा के विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय है । संस्था के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी ने कहा कि संस्कृत भाषा में वार्तालाप अत्यन्त सम्मान प्रदान करता है । संस्कृत भाषा आत्मा में विश्वास पैदा करती है । संस्कृताध्ययन तपस्या एवं उपासना है। एकाग्र होकर किसी भी भाषा को सरलता से सीखा जा सकता है। इस कार्यक्रम का सफल संचालन स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध की छात्रा कु. पूजा चौधरी ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. शंकरमुनि राय जी ने किया ।

इस संस्कृत सम्भाषण शिविर से लगभग 55 विद्यार्थी लाभान्वित हुये जिनमें से 7 महाविद्यालय से बाहर के थे, जिन्हें शिविर में अध्ययन की अनुमति प्रदान की गई । इस शिविर में विशेष रूप से सहभागिता लेने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया

विशेष व्याख्यान

दिनांक 24.10.2016

मुख्य वक्ता – शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह बघेल ने दिनांक 24.10.2016 को संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित 'काव्य लक्षण' विषय पर व्याख्यान दिया । कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्ति वाचन एवं सरस्वती पूजन के साथ हुआ। डॉ.सुमन सिंह बघेल ने उन्होनें आचार्य भरतमुनि से लेकर आचार्य क्षेमेन्द्र तक सभी आचार्यो के काव्यलक्षणों एवं काव्य प्रयोजनों को सविस्तार समझाया तथा आचार्य विश्वनाथ द्वारा प्रतिपादित विभिन्न आचार्यो के काव्य लक्षणों के खण्डन पर भी प्रकाश डाला । आचार्य मम्भर द्वारा बनाये गये छः काव्यप्रयोजनों को भी सोदाहरण प्रस्तुत किया । इसके अतिरिक्त संस्कृत व्याकरण एवं श्लोक व्याख्या पद्धति से सम्बन्धित तथ्यों को रोचक ढंग से उदाहरण सहित स्पष्ट किया । व्याख्यान कार्यक्रम का मच्च संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने किया । आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे ने किया । इस अवसर पर स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे ।

वाल्मिकी जयंती

दिनांक 27.10.2016

दिनांक 27.10.2016 को संस्कृत विभाग में वाल्मिकी जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस अवसर पर विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे, अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध के छात्र – छात्रायें उपस्थित थे । कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्ति वाचन एवं सरस्वती पूजन के साथ हुआ । अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे ने वाल्मिकी रामायण पर प्रकाश डालते हुये मूल रामायण के प्रमुख श्लोकों का वाचन एवं व्याख्या प्रस्तुत की । विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने लौकिक साहित्य के उदय, वाल्मिकी की आदि कवि के रूप में प्रसिद्धि उनकी काव्यकला तथा रामायण की उपजीव्यता पर प्रकाश डाला । उन्होने परवर्ती ग्रंथों पर रामायण के प्रभाव तथा रामायण कालीन संस्कृति पर भी विस्तृत प्रकाश डाला । उन्होने बताया कि वाल्मिकी रस सिद्ध कवि कहे जाते हैं तथा उनकी भाषा शैली सरस एवं सरल है । कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों ने वाल्मिकी के मार्ग का अनुसरण कर ख्याति प्राप्त की । कार्यक्रम का संचालन एम. ए. तृतीय सेमेस्टर के छात्र श्री फागेश्वर साहू ने किया । आभार प्रदर्शन श्री नीरज पटेल ने किया । सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्कृत भाषा में संचालित किया गया ।

स्वच्छता दिवस

दिनांक 11.11.2016

स्वच्छता पखवाडे के अंतर्गत महाविद्यालय के संस्कृत विभाग ने दिनांक 11.11.2016 को स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया । यद्यपि विभाग में प्रति बुधवार स्वच्छता कार्य किया जाता है तथापि इस दिन विशेष रूप से विभाग एवं सामने के परिसर को साफ कर रंगोली द्वारा विभाग का आंगन सजाया गया । विभाग के प्राध्यापकों ने भी इस स्वच्छता कार्य में अपनी सहभागिता दी । स्नात्तकोत्तर पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध के छात्र–छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक इस दिन स्वच्छता कार्य हेतु अपनी रूचि दिखाई ।

संस्कृत विभाग विस्तार कार्यक्रम ग्राम – सुरगी

दिनांक 05. 11. 2016

दिनांक 05.11.2016 को प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग के स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के 15 विद्यार्थियों द्वारा विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे के साथ विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम सुरगी जाकर नवोदित प्रज्ञा सुमन हाईस्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों को संस्कृत –संभाषण का प्रशिक्षण दिया गया ।

विस्तार कार्यक्रम हेतु प्रातः 09.00 बजे विभाग के 15 विद्यार्थी एवं विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने ग्राम सुरगी हेतु प्रस्थान किया । सर्वप्रथम मार्ग में स्थित मां भानेश्वरी शक्तिपीठ ग्राम – सिंघोला जाकर विभाग के विद्यार्थियों द्वारा दर्शन, देवपूजन, स्तोत्र एवं मन्त्रपाठ किया गया , इस प्रकार मंगलारम्भे की परम्परा का निर्वाह करने के पश्चात् लगभग प्रातः 11.00 बजे नवोदित प्रज्ञा सुमन हाईस्कूल ग्राम सुरगी पहुंचे । विद्यालय पहुंचकर लगभग 11.30 पर कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन के साथ हुआ । विभाग के विद्यार्थियों ने पूजन के समय सरस्वती वंदना एवं मन्त्र पाठ किया । तत्पश्चात् विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के द्वारा महाविद्यालय से आगन्तुक विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे एवं समस्त विद्यार्थियों का स्वागत तिलक लगाकर किया गया । स्वागत के पश्चात विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने महाविद्यालय के संस्कृत विभाग का परिचय देते हुये विस्तार कार्यक्रम का उद्देश्य एवं उपयोगिता स्पष्ट की । डॉ. देशपाण्डे ने बताया कि ग्राम सुरगी महाविद्यालय द्वारा गोद लिया गया ग्राम है । जहां विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत विविधि गतिविधियां आयोजित की जा रही है । आज यहां उपस्थित महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के विद्यार्थी विद्यालय के समस्त उपस्थित विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में उनका परिचय , विविध दैनिक उपयोगी वस्तुओं पशु, पक्षी, फूल, फल, रंग सम्बन्ध इत्यादि के संस्कृत नामों से परिचित करवायेंगे ।

कार्यक्रम का उद्देश्य जनमानस से संस्कृत भाषा का परिचय करवाना तथा सरलतम रीति से विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का ज्ञान देकर संस्कृत में उनकी रूचि जागृत करना है । यह ज्ञान उनके पाठ्यक्रम की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रशिक्षण उनके संस्कृत संभाषण कौशल एवं शब्द भंडार को बढायेगा । डॉ. दिव्या देशपाण्डे के उद्बोधन के पश्चात् सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के कुछ विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों को 'मनसा सततं स्मरणीयम्' तथा 'पठत संस्कृतम' संस्कृत गीतों का अभ्यास करवाया गया । तत्पश्चात एम. ए. तृतीय सेमेस्टर के छात्र फागेश्वर साहू द्वारा संस्कृत के लघु वाक्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपना परिचय संस्कृत में देना सीखाया गया । यथा स्वयं तथा

मातापिता का नाम, कक्षा, निवास स्थान आदि से सम्बन्धित वाक्य प्रयोग सीखाया गया । वाक्याभ्यास के दौरान विद्यालय के छात्रों ने अच्छा प्रतिसाद दिया एवं वे अपना परिचय संस्कृत में देने में समर्थ हुये । परिचय के पश्चात विभाग की छात्रा पूजा चौधरी ने विद्यालय के विद्यार्थियों को दैनिक उपयोगी वस्तुओं के संस्कृत नामों से परिचित करवाया । इस हेतु विभाग द्वारा विद्यालय जायी गयी दैनिक उपयोग वस्तुओं एवं विद्यालय परिसर में उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग किया गया । प्रत्येक वस्तु को दिखा कर उसके संस्कृत नाम से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया ।

तृतीय चरण में तृतीय सेमेस्टर के छात्र भेषराम टण्डन ने विद्यालय के विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में पशु, पक्षी, फूल, तथा फलों के नाम से अवगत कराया । इस हेतु पशु इत्यादि से सबंधित प्रकाशित चार्ट का प्रयोग किया गया । कार्यक्रम के अंतिम चरण में विद्यार्थी नीरज पटेल ने रंग एवं सम्बन्धों जैसे माता–पिता, दादा–दादी इत्यादि के संस्कृत नामों का विद्यार्थियों को परिचय दिया । सभी चरणों में विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास कार्य में सहभागिता दी ।

अन्त में संभाषण ज्ञान की दृष्टि से 'वदतु संस्कृतम' नामक 80 पुस्तकें विद्यालय के नवम तथा दशम कक्षा के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को वितरित की गई तथा अन्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा एवं विषय के महत्व ज्ञान की दृष्टि से पत्रक भी वितरित किये गये । अन्त में विद्यालय की संचालिका श्रीमति के.साहू ने समापन भाषण एवं आभार प्रदर्शन के दौरान कार्यक्रम की प्रशंसा की एवं अपनी प्रतिक्रिया महाविद्यालय की visitor Book में भी अंकित की । कार्यक्रम गरिमामय रूप से सम्पन्न करवाने के पश्चात लगभग 4.30 बजे वापसी के लिये प्रस्थान किया गया ।

विशेष व्याख्यान

दिनांक 07.11.2016

मुख्य वक्ता – डॉ. राघवेन्द्र शर्मा, सहायक प्राध्यापक (साहित्य शास्त्र) शा. संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

दिनांक 07.11.2016 को संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया । शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर में पदस्थ साहित्यशास्त्र के सहायक प्राध्यापक डॉ. राघवेन्द्र शर्मा जी ने 'साहित्य दर्पण' प्रथम एवं द्वितीय परिच्छेद' एवं 'काव्यप्रकाशानुसार रस दोष' विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया । कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्तिवाचन , मन्त्रोच्चार एवं सरस्वती पूजन के साथ हुआ । संस्कृत साहित्य परिषद् के अध्यक्ष फागेश्वर साहू ने श्री शर्मा का स्वागत किया । डॉ. राघवेन्द्र शर्मा जी ने अपने व्याख्यान में सर्वप्रथम साहित्यदर्पण एवं आचार्य विश्वनाथ का सामान्य परिचय देते हुये विश्वनाथोक्त काव्य–प्रयोजनों पर प्रकाश डाला तत्पश्चात् आचार्य विश्वनाथ द्वारा पूर्ववर्ती आचार्यो द्वारा प्रतिपादित काव्यलक्षणों के खण्डन को सविस्तार समझाया । इस क्रम में उन्होने आचार्य मम्मट द्वारा दिये गये काव्य लक्षण के खण्डन की विशेष व्याख्या की तत्पश्चात आचार्य विश्वनाथ द्वारा प्रतिपादित 'काव्य लक्षण–वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ' की व्याख्या करते हुए उन्होने शब्दार्थ भेद एवं शब्द शक्तियों की विवेचना की । रसदोष व्याख्या के प्रसंग में विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारीभावों पर प्रकाश डालते हुये

13 रसदोषों की व्याख्या की तथा अन्त में रसदोष परिहार पर प्रकाश डाला । व्याख्यान अत्यन्त सारगर्भित एवं रोचक था । उपर्युक्त गंभीर विषयों के ज्ञान के अतिरिक्त विद्यार्थियों ने डॉ. शर्मा से साहित्यशास्त्र के गूढ़ तथ्यों पर भी मार्गदर्शन प्राप्त किया । कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने किया । आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे द्वारा किया गया । सम्पूर्ण कार्यक्रमं संस्कृत भाषा में ही सम्पन्न हुआ ।

शैक्षणिक –भ्रमण भोरमदेव – जिला कबीरधाम (छ.ग.)

दिनांक 12.11.2016

दिनांक 12.11.2016 को प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह जी के मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के लगभग 35 विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण हेतु विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे एवं अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे जी के साथ भोरमदेव जिला–कबीरधाम (छ.ग.) हेतु प्रस्थान किया गया।

शैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रातः 7.00 बजे विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने प्रस्थान किया । प्रस्थान से पूर्व महाविद्यालय परिसर स्थित देवालयों में जाकर पूजार्चन किया एवं इस प्रकार मंगलारम्भे की परम्परा का निर्वाह करते हुये प्रातः लगभग 11.00 बजे भोरमदेव स्थित मंदिर परिसर में पदार्पण किया ।

भोरमदेव भारतवर्ष के मध्यक्षेत्र के ख्याति प्राप्त महत्वपूर्ण प्राचीन मन्दिरों में से एक है यह मंदिर कबीरधाम जिले में कबीरधाम से 18 किमी. उत्तरपश्चिम में छपरी नामक गांव के पास अवस्थित है । राजनांदगांव से इसकी दूरी लगभग 135 किमी. है । सतपुडा पर्वत की सालेटेकरी की पहाडियों द्वारा निर्मित सुरम्य गोलाकार घाटी में सरोवर के किनारे सघन अरण्य में यह विद्यमान है । इस मंदिर का निर्माण 11 वीं शती ई. के कलचुरी राजा पृथ्वीदेव प्रथम के समकालीन चवरापुर के फणिवंशीय छठे नामक गोपालदेव के राजत्व काल में हुआ था ।

नागर शैली में निर्मित यह मन्दिर स्थापत्य काल का बेहतरीन उदाहरण है । प्रायः इसकी तुलना खजुराहो के मन्दिरो से की जाती है तथा इसे छत्तीसगढ़ के खजुराहो की उपमा दी जाती है । इस मन्दिर की ऊॅचाई धरातल से 30 मीटर (100 फीट) है । मन्दिर की बाह्य भित्तियों पर मिथुन प्रतिमायें, गज, अश्व, नर्तक–नर्तकियां, देवी–देवताओं की प्रतिमायें यथा–चामुण्डा, सरस्वती, गणेश, नटराज, शिव आदि की प्रतिमायें उकेरी गई है । इस मन्दिर में तीन अर्द्ध मण्डप युक्त महामण्डप, अंतराल एवं गर्भगृह है । गर्भगृह का प्रवेश द्वार ओपदार काले पत्थर से निर्मित है जो कलात्मक अभिकल्पों से अलंकृत है । वर्गाकार गर्भगृह में कृष्ण प्रस्तर निर्मित शिवलिंग है जिसे भोरमदेव शिव के नाम से सम्बोधित करते है , स्थापित है । इस पूर्वाभिमुख मन्दिर में वर्गाकार मण्डप है। मण्डप में चार वर्गाकार स्तंभ मध्य में है तथा शेष स्तंभ दीवार से संलग्न है जिन पर ऊॅचा छत आधारित है । मण्डप से सम्बद्ध उत्तर , पूर्व एवं दक्षिण तीन दिशाओं में तीन सीढीदार अर्द्धमण्डप है । यह पूर्वाभिमुखी मन्दिर है। अंतराल खण्ड के पास मण्डप में भित्ति से सटकर गरूडसीन लक्ष्मीनारायण उपासक राजपुरूष एवं गणेश की प्रतिमायें रखी गई है । मन्दिर के अधिष्ठान में पंक्तिबद्ध गज एवं सिंहों का अंकन किया गया है । इस मन्दिर में प्रमुख रूप से उमा–महेश्वर, नटराज, शिव, नृसिंह, वामन, कृष्ण, सूर्य, भैरव, नृत्य–गणपति, कार्तिकेय, शिवगण, चामुण्डा, अम्बिका, सप्तमातृका – देवियां एवं

लक्ष्मीनारायण आदि की प्रतिमायें कलात्मक एवं दर्शनीय है । रामकथा के दृश्यों का पाषाणों पर सुन्दर अंकन किया गया ह। । इस मन्दिर की प्रसिद्धि यहां पर प्राप्त आध्यात्मिक भावोंसे परिपूर्ण देवप्रतिमायें योग एवं भोग सम्बन्धी दृश्यों के रूपांकन के कारण देश–विदेश में फैल चुकी है । ये प्रतिमायें समसामयिक ऐतिहासिक कालखण्ड की जीवन शैली की ओर इंगित करती है । भोरमदेव मंदिर काफी हद तक कोणार्क के सूर्य मन्दिर एवं खजुराहों के मन्दिरों में समानता रखता है । सम्भवतः यही कारण है कि इसे छत्तीसगढ़ का खजुराहों कहा जाता है । प्राकृतिक सौंदर्य की पृष्ठभूमि एवं इसके मन्दिर वास्तु को ध्यान में रखकर सर एलेक्जेण्डर कनिघम ने इसे उनके द्वारा देखे गये सर्वाधिक सुंदर मंदिरों में एक माना था । अब इनके शिखर पर कलश नहीं है इस मन्दिर के समीप उत्तर में परिसर के अन्दर एक ईंट निर्मित मन्दिर भी है। इस ईंट निर्मित मन्दिर मे प्रमुख मन्दिर की भांति वर्गाकार गर्भगृह है तथा अंतराल है किन्तु इसमें सामने मण्डप नहीं है । मात्र खुली उभारदार भित्ति है । इस मन्दिर का शिखरभाग क्षतिग्रस्त हो जाने से इसमें भी कलश तथा आमलक नहीं है । इस मन्दिर का प्रवेश द्वार प्रस्तर निर्मित है तथा इसमें सामने मध्य में स्तंभ तथा तीन भित्तिस्तंभ विद्यमान है । इसके गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। इसमें उमा–महेश्वर की प्रतिमा एवं उपासक दम्पत्ति (अंजलिवद्ध मुद्रा में बैठे हुये) की प्रतिमायें पूर्व में रखी थी जो अब भोरमदेव मुख्य मंदिर में स्थापित है । इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण मूर्तियां सुरक्षा की दृष्टि से संग्रहित की जाकर परकोटा के भित्ति के समानान्तर पेडस्टलों पर दर्शकों के अवलोकनार्थ प्रदर्शित की गई है ।

भोरमदेव में एक पुरातत्व संग्रहालय भी है इस संग्रहालय में खुदाई के पश्चात निकाली गई कई प्रखर मूर्तियां है । जिनमें अनेक देवी– देवताओं की भी मूर्तियां है । संग्रहालय के प्रवेश भाग में 13 वीं सदी ईसवी की नंदी की मूर्ति है । अंदर तीन वीधियां है जिनमें यह खुदाई की गई मूर्तियां स्थापित है । इन मूर्तियों में सती प्रस्तर मूर्तियां, खड्गधारी, धुनर्धर, परशुधारी योद्धाओं की मूर्तियां, देवी–देवताओं यथा – गोद में शिशु सहित अम्बिका, गरूडासीन लक्ष्मी नारायण, ब्रम्हाणी तथ ब्रम्हा, आसनस्थ उमा–महेश्वर प्रमुख है कुछ अभिलिख्ति सती प्रस्तर भी है कुछ खंडित मूर्तियां भी दिखाई देती है यथा खंडित सूर्य, खंडित मृदंग वादक, खंडित शिव प्रतिमा अधिष्ठान आदि । अधिकांश प्रस्तर मूर्तियां 12 वीं से 15 शताब्दी के मध्य की है ।

भोरमदेव मन्दिर पहुंचकर विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सर्वप्रथम गर्भगृह में जाकर पूजार्चन, वेदपाठ, तथा संस्कृत में शिव स्तोत्र का पाठ किया गया । तत्पश्चात बाहृय मण्डप में आकर अन्य देवी–देवताओं का पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ किया गया । पूजार्चन के पश्चात विभाग के प्राध्यापकों द्वारा मन्दिर के इतिहास, निर्माण शिल्प एवं स्थापत्य कला तथा शिलालेखों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई । मन्दिर के इतिहास एवं प्रस्तर मूर्तियों के विषय में मन्दिर के पुरोहित श्री संतोष दूबे जी द्वारा भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई । उन्होने अपनी प्रतिक्रिया भी विभाग के Visitor Book में अंकित की। तत्पश्चात भोरमदेव के पुरातत्व संग्रहालय में उपलब्ध प्रस्तर मूर्तियों एवं अन्य देवमूर्तियों का निरीक्षण कर तत्कालीन धार्मिक दशाओं से सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त की गयी । अन्त में मन्त्रपाठ के साथ सामूहिक भोजन कर शाम लगभग 5.00 बजे वापसी हेतु मधुर स्मृतियों को साथ लेकर प्रस्थान किया गया ।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित

दिनांक 20/12/2016 को शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में संस्कृत विभाग के विभिन्न वर्षों में अध्ययनरत् रहे भूतपूर्व छात्र सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। तत्पश्चात् विभाग के वर्तमान में अध्ययनरत् छात्रों के द्वारा तिलक लगाकर भूतपूर्व छात्रों का स्वागत किया गया। विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ.दिव्या देशपाण्डे ने भूतपूर्व छात्रों से उनका औपचारिक परिचय प्राप्त कर वे वर्तमान में किस कार्य में संलग्न है, इस विषय में चर्चा की। तत्पश्चात् भूतपूर्व छात्रा कु.डालेश्वरी साहू, छात्र श्री शिव कुमार साहू एवं श्री पारस ने विभाग से संबंधित अपना अनुभव कथन किया। विभागाध्यक्ष डॉ.दिव्या देशपाण्डे ने अपने उद्बोधन के द्वारा विभाग में सम्पन्न की जा रही विभिन्न गतिविधियों, पाठ्यक्रम में किये गये उचित परिर्वतनों, विभाग एवं वर्तमान विद्यार्थियों की प्रमुख उपलब्धियों से आगन्तुक भूतपूर्व छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने उपस्थित छात्रों से निवेदन किया कि वे विभाग की उन्नति से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में सतत् सहभागी होवे। भूतपूर्व विद्यार्थियों ने सुझाव दिया कि विभाग में नेट एवं सेट हेतु कक्षाएं आयोजित की जावे, जिसमें भूतपूर्व छात्रों को भी सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हो। इस विषय में विभागाध्यक्ष ने विद्यार्थियों को कक्षाएं आयोजित करने का पूर्ण आश्वासन प्रदान किया। भूतपूर्व विद्यार्थियों द्वारा फीडबैक प्रपत्र भरकर विभाग एवं महाविद्यालय के प्रति अपने मत प्रदान किये गये तथा आश्वासन दिया कि वे विभाग की उन्नति हेतु सतत् प्रयासरत रहते हुए विभाग की विभिन्न गतिविधियों में सहभागी बने रहेंगे।

संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 21/01/2017 को शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में पदस्थ संस्कृत साहित्य की सहायक प्राध्यापक डॉ.पूर्णिमा केलकर जी ने 'भारतीय दर्शन' एवं 'वेदान्तसार' विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्तिवाचन तथा वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात् सरस्वती पूजन एवं सरस्वती वन्दना की गई। संस्कृत साहित्य परिषद के अध्यक्ष श्री फागेश्वर साहू एवं संस्कृत विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ.कृष्णदत्त त्रिपाठी जी ने डॉ. पूर्णिमा केलकर का स्वागत किया। डॉ.केलकर ने अपने व्याख्यान में सर्वप्रथम दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुये षड़ आस्तिक दर्शनों एवं तीन नास्तिक दर्शनों पर क्रमशः प्रकाश डाला। उन्होंने प्रत्येक दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों को विद्यार्थियों को समझाया। इसी क्रम में वेदान्त दर्शन पर प्रकाश डालते हुये सदानन्दयोगीन्द्र कृत वेदान्तसार नामक ग्रन्थ को सविस्तार समझाया। सर्वप्रथम अनुबन्ध चतुष्टयों पर प्रकाश डालते हुये अधिकारी, विषय, सम्बन्ध एवं प्रयोजन की व्याख्या की। तत्पश्चात् साधनचतुष्टय की व्याख्या की। अनुबन्ध चतुष्टय के विस्तृत परिचय के पश्चात् अध्यारोप, अपवाद, ईश्वर, प्राज्ञ, सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर, पंचीकरण को समझाते हुये अन्त में जीवनमुक्ति तक सम्पूर्ण वेदान्तसार ग्रन्थ को उन्होंने अपने सारगर्भित उदबोधन में सम्मिलित किया। मोक्षमार्ग के अनुयायी को किस प्रकार साधना करनी चाहिये ? उसका विस्तृत विवेचन डॉ.केलकर के द्वारा प्रस्तुत किया गया। उदबोधन सारगर्भित एवं छात्रोपयोगी सिद्ध हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ.दिव्या देशपाण्डे ने किया। आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ.महेन्द्र नगपुरे द्वारा किया गयां। सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्कृत भाषा में ही सम्पन्न हुआ।

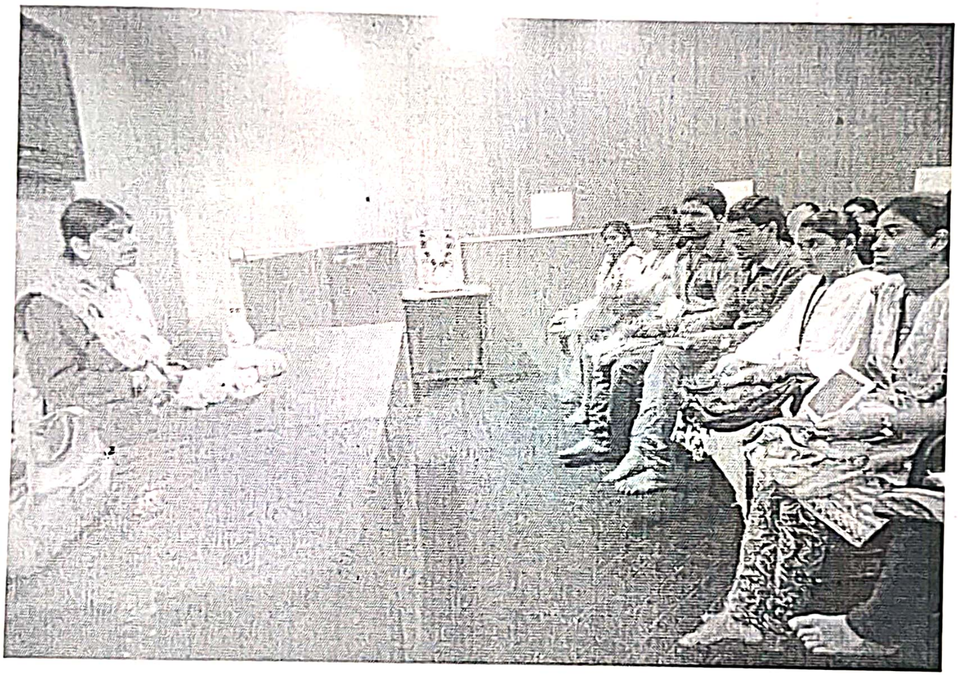

संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम

गणेशोत्सव

संस्कृत – सम्भाषण शिविर

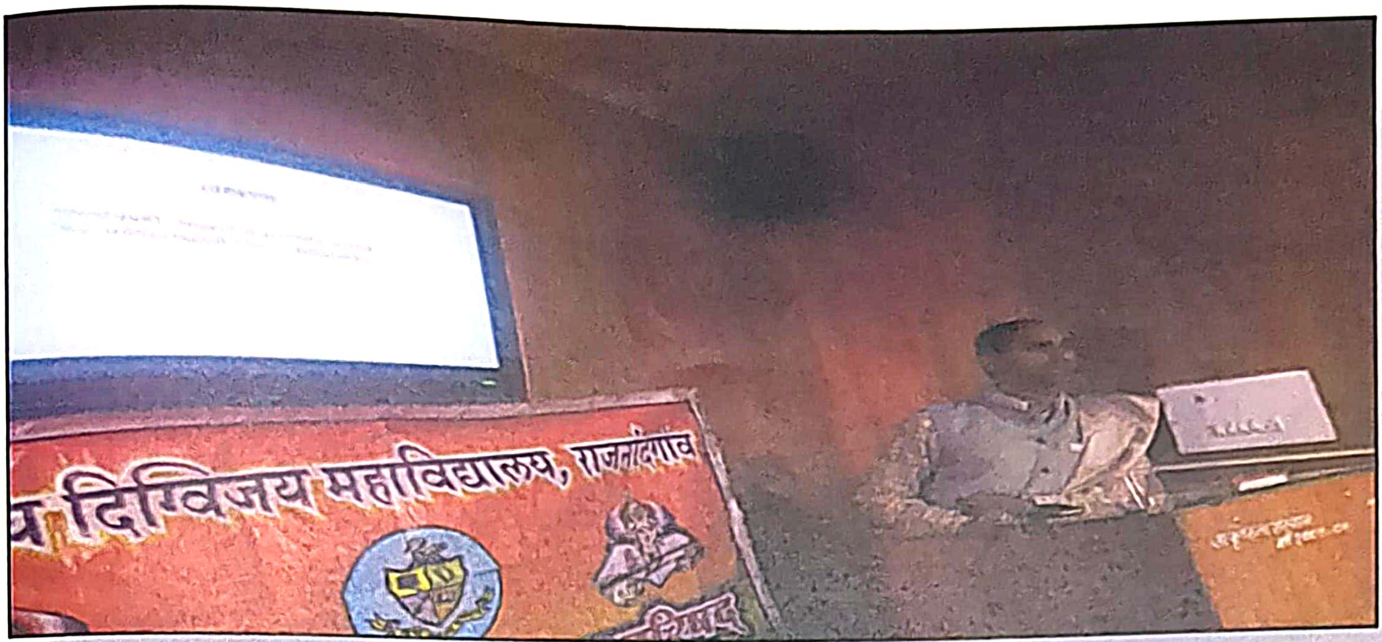

विशेष व्याख्यान – डॉ. राघवेन्द्र शर्मा

विशेष व्याख्यान – डॉ.पूर्णिमा केलकर

विशेष व्याख्यान – डॉ.सुमन बघेल

वाल्मिकी जयंती

संस्कृत विभाग विस्तार कार्यक्रम ग्राम – सुरगी

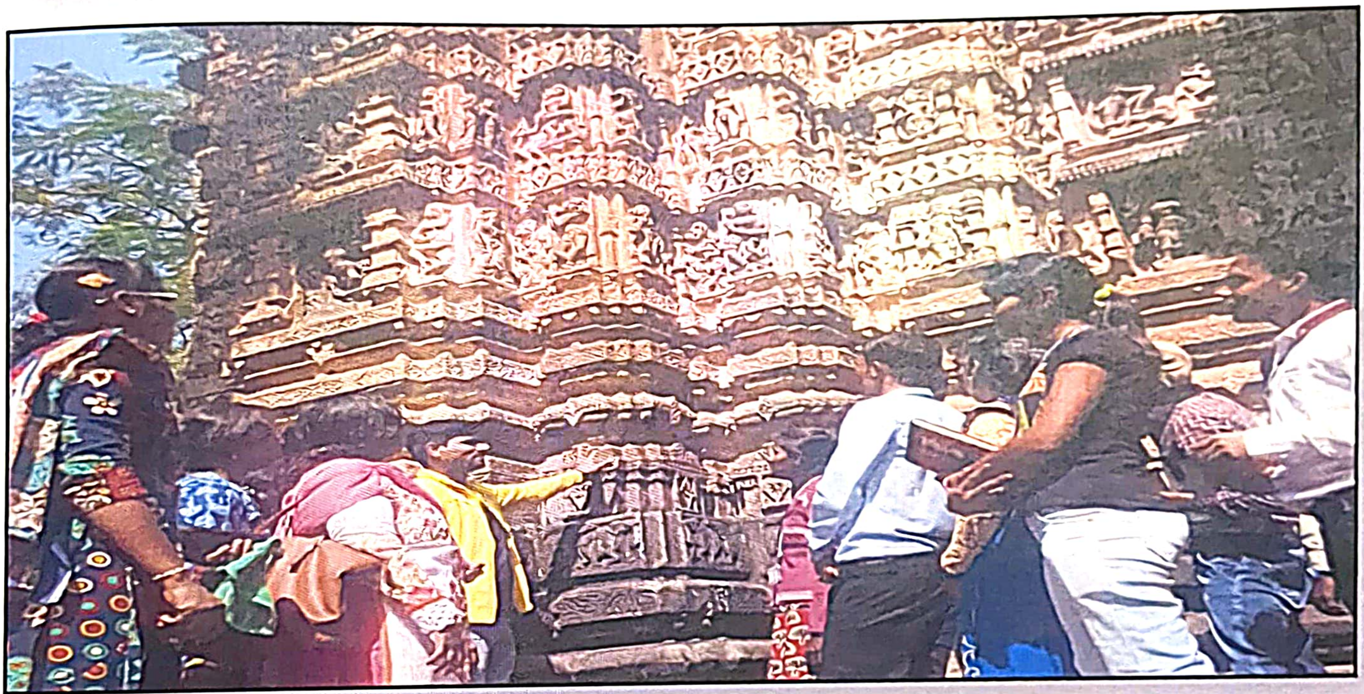

शैक्षणिक –भ्रमण भोरमदेव – जिला कबीरधाम (छ.ग.)

भूतपूर्व छात्र–छात्रा सम्मेलन

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी जी के दुर्ग आगमन में व्याख्यान श्रवण

संस्कृत में व्याख्यान

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया. वैदिक और लौकिक संस्कृत पर आधारित इस व्याख्यान में इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय की संस्कृत प्राध्यापक डॉ. श्रीमती पूर्णिमा केलकर ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिये. अपने दो घंटे के व्याख्यान में डॉ. केलकर ने भारतीय साहित्य और संस्कृति के विकास में संस्कृत की महत्वपूर्ण भूमिका का भी उल्लेख किया. आपने कहा कि संस्कृत को कठिन भाषा होने का भ्रम त्यागने की आवश्यकता है. इसकी सरलता की प्रकृति पर आपने कहा कि संस्कृत की वैय्याकरणिक प्रकृति बहुत ही सरल और सुगम है. वाक्य रचना से लेकर उसकी क्रिया और वाक्य विन्यास की स्वाभाविक प्रकृति को आपने अत्यंत ही सहज ढंग से विद्यार्थियों को समझाया. व्याख्यान के प्रारंभ में विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना का सरस गायन कर पूजा अर्चना की गई. विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने मुख्य अतिथि का स्वागत परिचय दिया. पूरी तरह संस्कृत में संचालित इस कार्यक्रम का संचालन एम. ए. अंतिम के छात्र श्री पारस कुमार ने किया. कार्यक्रम के अंत में डॉ. बालकराम चैकसे ने आभार प्रकट किया.

15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन

अमन पथ न्यूज 8-10-16

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में संचालित संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन 6 अक्टूबर को हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि गढ़वाल विश्व विद्यालय उत्तराखण्ड के प्राध्यापक एवं यूजीसी के सदस्य डॉ. एससी सिंह एवं विशेष अतिथि देवीनंदा मेश्राम, प्राचार्य कमला कालेज, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह, बंशीधर द्विवेदी, राकेश वर्मा, संस्कृति विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनिराय, डॉ. दिव्या देशपाण्डे विशेष रूप से उपस्थित थे। हिन्दी के प्राध्यापक डॉ. शंकर मुनिराय को संस्कृत सेवा में विशेष रूप से कार्य करने के लिए शाल, श्रीफल प्रशस्ति पत्र भेटकरर सम्मानित किया गया। इस संस्कृत संभाषण शिविर में सम्पन्न हुए। संस्कृत निबंध एवं गीता पाठ प्रतियोगिता में पूजा चौधरी प्रथम स्थान में रहे। मुख्य अतिथि के रूप में पहुँचे डॉ. एससी सिंह ने कहा कि यह दिग्विजय महाविद्यालय संस्कृत शिक्षा के लिए दृढ़ निश्चय है और इसका संस्कृत को लेकर किया जा रहे विभिन्न प्रकार के प्रयास सहारनीय है। संस्था के प्राचाय ने कहा कि संस्कृत बहुत सम्मान देती है। संस्कृत आत्मा में विश्वास पैदा करती है। संस्कृत तपस्या, उपासना है। एकाग्र होकर किसी भी भाषा को सरलता से सीखा जा सकता है। इस कार्यक्रम का सफल संचालन पूजा चौधरी द्वारा किया गया। व आभार व्यक्त डॉ. शंकर मुनिराय द्वारा व्यक्त किया गया। इस 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण में विशेष रूप से सहभागिता निभाने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। और बताया कि आगामी दिनों में महाविद्यलय में संस्कृत कर्मकांठ का कोर्स शुरू करने के लिए प्रयास किया जा रहा है। इस अवसर पर महाविद्यालय के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

काव्य लक्षण पर अतिथि व्याख्यान

25.10.2016

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय, महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में शिवनाथ कॉलेज के प्राचार्य, डॉ.सुमन सिंह बघेल का सोमवार को काव्य लक्षण पर अतिथि व्याख्यान हुआ। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत स्वास्तिवाचन और सरस्वती माता के तैलचित्र पर माल्यार्पण से किया गया। डॉ.सुमन सिंह बघेल ने विभिन्न आचार्यो के काव्य लक्षण पर प्रकाश डाला। उन्होने आचार्य भरतमुनि से लेकर क्षेमेन्द्र तक के अलग-अलग काव्य प्रायोजन के बारे में जानकारी दी। संस्कृत व्याकरण एवं व्याख्या पद्धति से संबंधित तथ्यों को रोचक ढंग से स्पष्ट किया। व्याख्यान का सफल संचालन डॉ.दिव्या देश पाण्डे एवं आभार व्यक्त डॉ. महेन्द्र नगपुरे द्वारा किया गया। इस मौके पर स्नाकोतर के विद्यार्थियों ने रूची पूर्वक सहभागिता निभाई। यह जानकारी महाविद्यालय बी.जे.एम.सी. प्रथम वर्ष के छात्र रमन सोनवानी ने दी।

बच्चों को संस्कृत से भाषण का प्रशिक्षण

नवभारत 23.11.16

राजनांदगांव. संस्कृत विभाग के स्नातकोतर प्रथम सेमेस्टर एवं तृतीय सेमेस्टर के 15 विद्यार्थियों द्वारा विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम सुरगी जाकर नवोदित प्रज्ञा सुमन हाई स्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों को संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण दिया गया. महाविद्यालय के छात्रों द्वारा सर्वप्रथम विद्यालय के विद्यार्थियों को संस्कृत गीत का अभ्यास करवाया गया.

संस्कृत विभाग में व्याख्यान माला

नवभारत 23.11.16

राजनांदगांव. दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया. शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर में पदस्थ साहित्यशास्त्र के सहायक प्राध्यापक डॉ.राघवेन्द्र शर्मा ने साहित्यदर्पण एवं काव्य प्रकाशानुसार रसदोष विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया. स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्रों को इन गंभीर विषयों का ज्ञान प्राप्त होने के साथ-साथ साहित्य शास्त्र के गूढ़ तथ्यों पर भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ. कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने किया. आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ.महेन्द्र नगपुरे ने किया.

खबरों में संस्कृत - विभाग

शैक्षणिक भ्रमण
नवभारत 23.11.16

राजनांदगांव. दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत भोरमदेव जाकर इस प्राचीन धार्मिक स्थल का ज्ञान प्राप्त किया गया. विभाग के लगभग 35 छात्र-छात्राएं इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए. भोरमदेव जाकर वहां विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सर्वप्रथम देवपूजार्चन, वेदपाठ तथा संस्कृत स्तोत्र पाठ किया गया. तत्पश्चात मंदिर के इतिहास, निर्माण, शिल्प, स्थापत्य कला तथा शिलालेखों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई. भोरमदेव के पुरातत्व संग्रहालय में उपलब्ध देव मूर्तियों का निरीक्षण कर तत्कालिन धार्मिक दशाओं से संबंधित जानकारी भी प्राप्त की गई.

दिग्विजय कॉलेज संस्कृत विभाग में व्याख्यान कार्यक्रम

25.11.16

राजनांदगांव(दावा)। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में ७ नवम्बर को व्याख्यान आयोजित किया गया। शास. संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर में साहित्य शास्त्र के सहायक प्रध्यापक डॉ. राघवेन्द्र शर्मा उपस्थित थे। उन्होंने साहित्य दर्पण एवं रस दोष पर संस्कृत में व्याख्यान दिये। स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को इन विषयों के अतिरिक्त साहित्य शास्त्र के गूढ तथ्यों पर भी मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे व आभार व्यक्त महेन्द्र नगपुरे ने किया। कालेज के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के मार्गदर्शन में यह व्याख्यान कार्यक्रम हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्कृत में ही सम्पन्न हुआ। यह जानकारी बीजेएमसी प्रथम वर्ष के छात्र रमन सोनवानी ने दी।

विशेष व्याख्यान

23.11.16 पत्रिका

राजनांदगांव. दिग्विजय कॉलेज के संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। डॉ. राघवेन्द्र शर्मा ने साहित्यदर्पण एवं काव्य प्रकाशानुसार रसदोष विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया।

छत्तीसगढ़

संक्षिप्त खबरें

संस्कृत विभाग में व्याख्यान कार्यक्रम

राजनांदगांव, 25 नवंबर। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में गत् 7 नवंबर को व्याख्यान आयोजित किया गया। शास. संस्कृत महाविद्यालय रायपुर में साहित्य शास्त्र के सहायक प्रध्यापक डॉ. राघवेन्द्र शर्मा उपस्थित थे। उन्होंने साहित्य दर्पण एवं रस दोष पर संस्कृत में व्याख्यान दिए। स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को इन विषयों के अतिरिक्त साहित्य शास्त्र के गूढ़ तथ्यों पर भी मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे व आभार व्यक्त महेंद्र नगपुरे ने किया। प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह के मार्गदर्शन में यह व्याख्यान कार्यक्रम हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम संस्कृत में ही संपन्न हुआ।

साहित्य परिषद् का गठन

20.9.16

राजनांदगांव (दावा)। सोमवार को शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय मे १५ दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उद्घाटन के साथ संस्कृत साहित्य परिषद् का गठन भी किया गया। जिसमें प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह के अध्यक्षता में संस्कृत साहित्य विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनिराय, डॉ. दिव्या देशपाण्डे, अतिथि व्याख्याता महेन्द्र नगपुरे उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्घाटन और परिषद् की घोषणा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह ने की। प्रवीण्यता सूची के आधार पर अध्यक्ष फागेश्वर साहू, उपाध्यक्ष पूजा चौधरी, सचिव चंद्रकली, सहसचिव अनिशा कौर, मनोनीत हुए।

भोरमदेव में संस्कृत विभाग के विद्यार्थी

राजनांदगांव, 25 नवंबर। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा गत् 12 नवंबर को शैक्षणिक भ्रमण के तहत विद्यार्थियों को भोरमदेव, प्राचीन धार्मिक स्थल ले जाया गया। विभाग के लगभग 35 छात्र-छात्राएं इस भ्रमण में शामिल हुए। भोरमदेव जाकर वहां देव पूजा-अर्चना, वेद पाठ तथा संस्कृत श्लोक पाठ किया गया। मंदिर के इतिहास, निर्माण, शिल्प एवं स्थापत्य कला तथ शिलालेखों से संबंधित जानकारी प्राप्त की। वहां के पुरातन संग्रहालय में उपलब्ध देव मूर्तियों का निरीक्षण एवं तत्कालीन धार्मिक दशाओं को जाना। अंत में सामूहिक भोजन, मंत्र पाठ के साथ करते कार्यक्रम का समापन किया गया।

न्यूज़ Window

दिग्विजय कालेज के विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत भोरमदेव जाकर इस प्राचीन धार्मिक स्थल का ज्ञान प्राप. किया गया। विभाग के लगभग 35 छात्र-छात्राएं इस कार्यक्रम से लाभावित हुए। भोरमदेव जाकर वहां विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सर्वप्रथम देव पूजा अर्चना, वेदपाठ तथा संस्कृत स्तोत्र पाठ किया गया। तत्पश्चात मंदिर के इतिहास, निर्माण, शिल्प, स्थापत्य कला तथा शिलालेखों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। भोरमदेव के पुरातत्व संग्रहालय में उपलब्ध देव मूर्तियों का निरीक्षण कर तत्कालिन धार्मिक दशाओं से संबंधित जानकारी भी प्राप्त की गई। अंत में मंत्र पाठ के उपरांत सामूहिक भोजन कर वापसी हेतु प्रस्थान किया गया।

दिग्विजय कालेज में विशेष व्याख्यान कार्यक्रम संपन्न

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर में पदस्थ साहित्य शास्त्र के सहायक प्राध्यापक डा. राघवेन्द्र शर्मा ने साहित्यदर्पण एवं काव्य प्रकाशानुसार रसदो विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया। स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्रों को इन गंभीर विषयों का ज्ञान प्राप्त होने के साथ-साथ साहित्य शास्त्र के गूढ़ तथ्यों पर भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डा. दिव्या देशपांडे ने किया। आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डा. महेन्द्र नगपुरे ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम संस्कृत भाषा में ही संपन्न किया गया।

विद्यार्थियों को दिया संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण

राजनांदगांव। संस्कृत विभाग के स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर एवं तृतीय सेमेस्टर के 15 विद्यार्थियों द्वारा विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम सुरगी जाकर नवोदित प्रज्ञा सुमन हाई स्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों को संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण दिया गया। महाविद्यालय के छात्रों द्वारा सर्वप्रथम विद्यालय के विद्यार्थियों को संस्कृत गीत का अभ्यास करवाया गया। तत्पश्चात लघु वाक्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपना परिचय संस्कृत में देना सीखाया गया। दैनिक उपयोगी वस्तुओं, पशु, पक्षी, फल, फुल संबंध इत्यादि संस्कृत नामों से भी विद्यार्थियों को परिचित करवाया गया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में संभाषण ज्ञान की दृष्टि से वदतु संस्कृत पुस्तकें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को वितरित की गई तथा संस्कृत भाषा एवं विषय के महत्व ज्ञान की दृष्टि से पत्रक भी वितरित किये गये। विभागाध्यक्ष डा. दिव्या देशपांडे ने विद्यार्थियों को संस्कृत के महत्व, संस्कृत संभाषण कौशल एवं संस्कृत के क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं पर व्याख्यान दिया।

हरिभूमि 3/2/17

संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में गत् दिवस विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में पदस्थ संस्कृत साहित्य की सहायक प्राध्यापक डॉ. पूर्णिमा केलकर ने भारतीय दर्शन एवं वेदांत सार विषयों पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्ति वाचन तथा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात सरस्वती पूजन एवं सरस्वती वंदना की गई। संस्कृत साहित्य परिषद के अध्यक्ष फागेश्वर साहू एवं संस्कृत विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ. कृष्णदत्त त्रिपाठी ने डॉ. पूर्णिमा केलकर का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिव्या देशपांडे व आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे द्वारा किया गया।

व्याख्यान में कॉलेज के विद्यार्थियों ने जाना आस्तिक-नास्तिक व वेदांत दर्शन

राजनांदगांव| दिग्विजय कॉलेज के संस्कृत विभाग में अतिथि व्याख्यान हुआ। इसमें मुख्य इंदिरा कला संगीत विवि की सहायक प्राध्यापक डॉ.पूर्णिमा केलकर थी।

व्याख्यान का विषय भारतीय दर्शन व वेदांत सार था। वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ शुरू हुए व्याख्यान में डॉ. केलकर ने संस्कृत विभिन्न दर्शनों की जानकारी दी। डॉ. केलकर ने विद्यार्थियों को संस्कृत के आस्तिक दर्शन,नास्तिक दर्शन व वेदांत दर्शन की जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने वेदान्तसार नामक ग्रंथ के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। अतिथि व्याख्याता डॉ.कृष्णदत्त त्रिपाठी ने भी व्याख्यान के विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। प्राचार्य डॉ.आरएन सिंह, अध्यक्ष फागेश्वर साहू मौजूद रहे।